Dr. Raman Kumar Thakur

Asstt.Prof.(Guest)Deptt. of.Economics,
D.B.College,Jaynagar. madhubani.

Class:-B.A.part-2(H) Paper-4th Date:-10-08-2020.

Lecture n.-10.

Topic:- जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर प्रभाव(Efects on population Growth on Economic Development)

:-एडम स्मिथ ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक" wealth of nation" में आर्थिक वृद्धि पर जनसंख्या का परिणाम का स्पष्ट वर्णन किया है। एडम स्मिथ ने जब से wealth of nation पुस्तक लिखी है तब से आर्थिक वृद्धि पर जनसंख्या के परिणाम, अर्थशास्त्रियों का ध्यान आकर्षित करते रहे हैं। एडम स्मिथ ने लिखा है "प्रत्येक राष्ट्र का वार्षिक श्रम ऐसी निधि है जो मूल रूप से उसके लिए जीवन की सब आवश्यकताओ और सुविधाओं की पूर्ति करता है ।" केवल माल्थस और रिकार्डो ने ही अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों के बारे में घबराहट पैदा कर दी। उनका मानना था कि जनसंख्या वृद्धि से आर्थिक विकास में कमी आएगी। साथ ही राष्ट्र पर भी अतिरिक्त बोझ पड़ेगा। परंतु उनकी आशंकाएं निराधार सिद्ध हुई क्योंकि पश्चिमी यूरोप में जनसंख्या वृद्धि से ही

औद्योगिकरण तेजी से हुआ है। जनसंख्या वृद्धि ऐसी अर्थव्यवस्थाओं के विकास में भी सहायक हुआ है जो देश धनी हैं, उनमें पूंजी प्रचुर मात्रा में है और श्रम की दुर्लभता है। ऐसे देशों में औद्योगिक क्षेत्र के प्रति श्रमिक आपूर्ति वक्र लोचात्मक है , जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि की ऊंची दर होने पर भी उत्पादकता में तेजी से वृद्धि हुई है। इस तरह से यह कहा जा सकता है की जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि के परिणाम स्वरूप समस्त राष्ट्रीय उत्पादन में अनुपात से अधिक वृद्धि हुई है।

1). जनसंख्या तथा आर्थिक विकास(Population and Economic Development):- अल्प विकसित देशों के विकास पर जनसंख्या वृद्धि के परिणाम विकसित देशों की स्थितियों से सर्वथा भिन्न है। जनसंख्या वृद्धि इनके आर्थिक विकास पर निम्न तरीकों से कूप्रभाव डालती है - प्रथम द्रुत, जनसंख्या वृद्धि वर्तमान उँचे उपभोग तथा भविष्य में ऊंचा उपभोग लाने हेतु निवेश के बीच चुनाव को अधिक दुर्लभ बना देती है। आर्थिक विकास निवेश पर निर्भर करता है। साथ ही अल्प विकसित देश में निवेश के लिए उपलब्ध संसाधन सीमित होते हैं। इसलिए तीव्र गति से बढ़ रही जनसंख्या ऊंचे भाभी उपभोग के लिए अपेक्षित निवेश को रोकती है।, दूसरे शब्दों में द्रुत जनसंख्या वृद्धि देश के प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक

उपयोग करती है ऐसा विशेषकर वहां होता है जहां अधिकतर लोग अपने निर्वाह के लिए कृषि पर निर्भर रहते हैं कुदरत गति से बढ़ रहे जनसंख्या के कारण कृषि ज्योति छोटी हो जाती है और उनको जोतना अलाभकारी होता है ।

2) जनसंख्या तथा रहन-सहन(Population and Standard of living):-क्योंकि रहन-सहन के महत्वपूर्ण निर्धारकों में से प्रति व्यक्ति आय एक है। इसलिए जनसंख्या वृद्धि के संबंध में प्रति व्यक्ति आय को प्रभावित करने वाले साधन रहन-सहन के स्तर पर भी समान रूप से लागू होती हैं। तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या खाद पदार्थों, कपड़ों, मकानों इत्यादि के लिए मांग बढ़ा देती है।

3) जनसंख्या तथा प्रति व्यक्ति आय(Population and per Capita income):-जनसंख्या वृद्धि का प्रति व्यक्ति आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है पहला, यह भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढाती है। दूसरा, यह उपभोग वस्तुओं की लागते बढ़ाती है। तीसरा, यह पूंजी के संचय में हास करती है। क्योंकि परिवार के सदस्यों के बढ़ जाने पर खर्च बढ़ जाते हैं।

4) जनसंख्या तथा कृषि विकास(Population and Agricultural Development):-, अल्प विकसित देशों में लोग अधिकतर देहातों में रहते हैं। उनका प्रमुख व्यवसाय कृषि ही रहता है।

इसलिए जनसंख्या वृद्धि होने पर भूमि- व्यक्ति अनुपात बिगड़ जाता है । भूमि पर जनसंख्या का अतिरिक्त दबाव इसलिए बढ़ता है कि भूमि की पूर्ति लोचरहित होती है। इससे अदृश्य बेरोजगारी बढ़ जाती है। और प्रति व्यक्ति आय और भी घट जाती है।

5) जनसंख्या तथा रोजगार(Population and employment):- तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या अर्थव्यवस्था को सामूहिक बेरोजगारी तथा अल्प बेरोजगारी में धकेल देती है । जब जनसंख्या में वृद्धि होती है तो कुल जनसंख्या से श्रमिकों का अनुपात बढ़ जाता है। परंतु पूरक साधनों के अभाव में नौकरियां बढ़ाना संभव नहीं होता है। परिणाम यह होता है कि श्रम शक्ति में वृद्धि होने पर बेरोजगारी तथा अल्प बेरोजगारी बढ़ जाती है । तीव्र गति से जनसंख्या वृद्धि होने से रोजगार का अस्तर घट जाता है।